हाशिए का समाज

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव
डॉ. ज़हीरूद्दिन रफियोद्दिन पठान

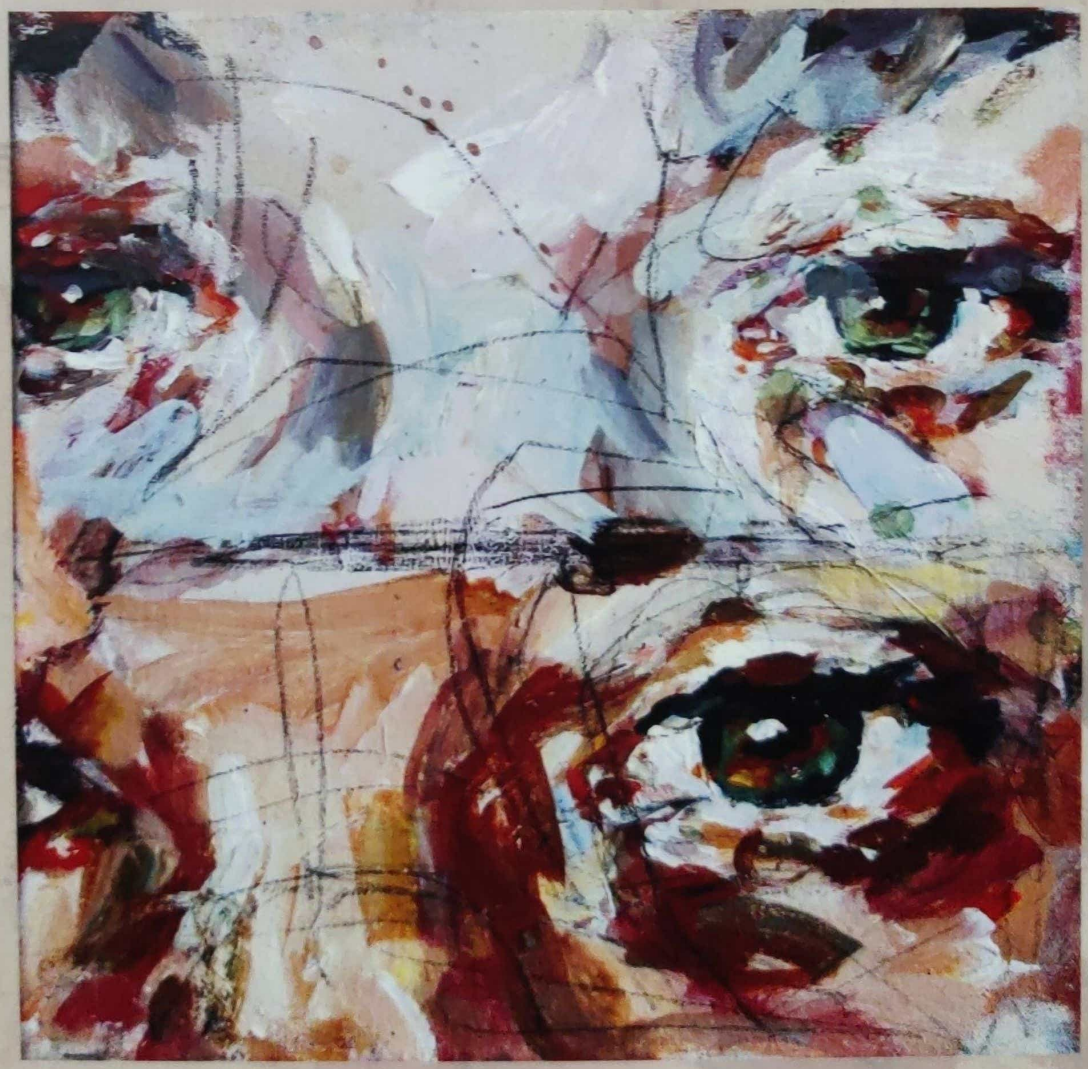

परिकल्पना

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं विचारों से पूर्णतः संपादक और प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2018
ISBN : 978-93-87859-08-1

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, बी-7, सरस्वती कामप्लेक्स, सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ला, गाजियाबाद-201010 से टाइप सेट होकर

काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

मुंडा जनजाति की लोककथाएँ 69
—डॉ. रवी कुमार

रुज्जर जनजाति की लोककथाएँ 73
—डी. जनार्दन

दक्षिण भारत के उपेक्षित समुदायों की लोकभाषाएँ 75
—डॉ. के.. श्याम सुन्दर

बेड़िया समुदाय के राई में छिपा लोकनाट्य 78
—चेन्नकेशव रेड्डी

हिंदी कथा साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श 82
—प्रा. शेख परवीन बेगम, शेख इब्राहीम

अल्पसंख्यक साहित्य विमर्श की प्रमुख हिंदी कहानी लेखिकाएँ 90
—डॉ. ए.डी. चावड़ा

'तिनका तिनका आग' में चित्रित दलित चेतना 99
—इबरार खान

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में नारी विद्रोह 107
—प्रा. संतोष येरावार

भारत में आदिवासी वर्ग चेतना : औपन्यासिक संदर्भ 112
—डॉ. रेखा

समकालीन उपन्यासों में किन्नरों की त्रासदी 115
—डॉ. शबाना हबीब

दलित साहित्य के दार्शनिक और वैचारिक आधार 123
—डॉ. एम. रघुनाथ

हिन्दी उपन्यासों में : दलित शोषण के विविध आयाम 127
—डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

निर्मला पुतुल की कविताएँ : आदिवासी जीवन का सशक्त दस्तावेज 129
—डॉ. प्रिया ए.

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में नारी विद्रोह

–प्रा. संतोष येरावार

संसार की आधी आबादी कही जाने वाली नारियां हमारे समाज का एक अहम् हिस्सा है। नारी ही हमारी सभ्यता संस्कृती की नींव है। यदि नींव को हटाकर इमारत खड़ी करने का काम किया जाएगा तो जाहिर है इमारत कमजोर और बेबुनियाद बनेगी। समाज में यदि क्रांति लाना है तो नारियों के बिना न तो समाज की प्रगती होगी और न कोई क्रांति आ सकती है।

वर्तमान समय में नारियों ने अपनी सदियों की खामोशियों को तोड़ा है। उसके व्यक्तिगत जीवन का उद्देश, मन, मिजाज, रहन-सहन सब कुछ बदल रहा है। आज नारी अपने अस्तित्व, चेतना, अस्मिता के प्रति हमें जागृत दिखाई देती है। उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, मृदला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मृणाल पांडे जैसे अनेक नाम आठवें दशक में उभरे तथा इनकी रचनाओं ने पाठकों का भी ध्यान आकृष्ट किया है। ऐसे समय में मुस्लिम समाज में पली-बढ़ी और प्रो. रामचंद्र के साथ विवाह कर दोनों धर्मों की सांझा संस्कृती और नारियों की स्थिती एवं विषमताओं तथा अस्तित्व के प्रति जागृत नारियों का चित्रण इनके कथा साहित्य में दिखाई देता है।

हिन्दी कथा साहित्य में नारी के विद्रोह या बगावत करने के पीछे, पुरुषों का अब तक का समाज था। गुलामी भेद-भाव शोषण, अत्याचार, असमानता है। पुरुष द्वारा नारी का शोषण हर समाज में होता रहा है और आज की तीसरी दुनिया के देशों में नारी वह किसी भी धर्म या संप्रदाय की क्यों न हो पुरुष समाज के शोषण का शिकार बनी है।

अत्याचार का सिलसिला जब असीम हो जाता है, तब या तो नारी उसे अपनी किस्मत समझकर सब कुछ चुपचाप झेल लेती है या विद्रोह करती है।

नासिरा शर्मा प्रगतिशील विचारों की लेखिका हैं। उनके उपन्यास, 'शाल्मली'

यदि हिंदू दांपत्य की विडंबना को चित्रित करता है, तो ठिकरे की मंगनी मुस्लिम समाज की नारी की मर्मांतक कहानी है। पति सदियों से पत्नी को अपनी संपत्ति समझता और अपनी मर्जी के मुताबिक उसका उपयोग करता रहा है। हिंदू समाज में पत्नी पूरी तरह से पति की संपत्ती, दान की हुई वस्तु मानी जाती है इसमें संदेह नहीं। इस स्थिती में पुरुष की परंपरागत मानसिकता दांपत्य संतुलन में बाधक बन जाती है और पति-पत्नी दोनों का जीवन दुःखद बन जाता है।

शाल्मली उपन्यास में शाल्मली एक पढ़ी लिखी और नौकरी करने वाली युवती है। पर उसके पति नरेश को उसका नौकरी करना पसंद नहीं है। पति के रुप में नरेश शाल्मली पर अपना पूरा कब्जा चाहता है, चाहे वह पद योग्यता और प्रतिभा में उससे हीन ही क्यों न हो। वह अपनी पत्नी को अपनी दासी योग्य समझता है। ''अब तुम मेरी नकल मत करो, तुम औरत हो और अपनी मर्यादा को पहचानों।[1] कहकर उसे अपमानित करता है। फिर भी शाल्मली की कोशिश संबंधों को बनाएं रखने की रहती है। किंतु जब शाल्मली को जब नरेश के बाह्य संबंधों का पता चलता है तब शाल्मली खुद को समेट नहीं पाती आखिर वह नरेश को अपना फैसला सुना देती है–''नरेश मुझे और उसके बीच किसी एक को चुनने की स्वतंत्रता तुम्हें देती हूं। उसके साथ रहकर तुम्हें अपना जीवन सार्थक लगता है तो।''[2] मुस्लिम समाज में नारी की स्थिति सबसे दयनीय है। धर्म की आड़ में मुस्लिम समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अनेक कुरीतियों का निर्माण कर दिया है। जिसे मुस्लिम समाज में सभी लोगों को मजबूरन स्वीकार करना पड़ता है। इस व्यवस्था के शोषण अत्याचार एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नियमों का शिकार होना पड़ता है। किंतु 'मुस्लिम धर्म' समानता के बर्ताव पर जोर देता है, क्योंकि इस्लाम की दृष्टि में सभी मुसलमान समान हैं। मुस्लिम धर्म समानता का हिमायती है इसलिए कथनी और करनी में एकता पर वह विश्वास रखता है। जहाँ कथनी और करनी में फर्क दिखाई पड़ता है, वहाँ मुस्लिम धर्म की आवाज बुलंद होती है, वह कभी 'संगसार' के रुप में अपनी भूमिका अदा करता है। समाज में धर्म के नाम पर होने वाले अनाचारों धार्मिक पाखंण्डों, अंधविश्वासों, कुरीतियों तथा रुढ़ियों का मुस्लिम नारी द्वारा विरोध तथा उसके प्रति विद्रोह अभिव्यक्त हुआ है।

नासिरा शर्मा की 'संगसार' कहानी मुस्लिम समाज में नारी की स्थिती का उल्लेख करती है और धर्म के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त करती है। इस कहानी की पात्र आसिया की एक छोटी सी भूल मुस्लिम समाज के पितृसतात्मक व्यवस्था में बहुत बड़ा पाप मानी जाती है और इसकी एक ही सजा हो सकती 'संगसार' जा पत्थरों से मारमार कर उसकी जान लेना है। आसिया की मां अपनी बड़ी बेटी

आसमा से कहती है, कि–"मर्द सींगा भी करेगा ब्याहता के रहते दूसरी शादी भी करेगा और बाहर भी जाएगा उसे कौन रोक सकता है भला? लोग थू-थू भी करेंगे तो फर्क नहीं पड़ता। मगर औरत यह सब करेगी तो न घर की रहेगी न घाट की। दूसरा शौहर करना तो दूर किसी से आशनाई भी हुई तो दुनिया उसे हरामकारी और मजहब उसे जानकारी कहेगा, मगर उसके सिर पर तो इन्कलाब सवार है। आसिया को समझाने के लिए खाला को बुलाया जाता है मगर आसिया खाला के समझौते को नामंजूर करती है; क्योंकि आसिया को आजादी चाहिए, इसकी कीमत जान देने से चूकती है तो उसे यह भी स्वीकार है। आसिया बेखौफ बड़ी निडरता के साथ कहती है की–"आपका पुराना कानून नई परेशानियों का हल नहीं जानता, मरते घुटते इन्सान की मदद को नहीं पहुंचता, इसलिए आप जिंदगी को खौफ की दीवारों में चुना देना चाहते हैं, ताकी इन्सान एक बार मिली जिंदगी खुलकर न जी सके।"[4]

अंत में आसिया को अपने बेखौफ मुक्ति की कीमत जान गंवा कर चुकानी पड़ती है। वह धार्मिक नियम और फतवों के आधार पर संगसार कर दी जाती है। कहानी के अंत में लेखिका ने सवाल उठाया कि अगर समाज आसिया को दोषी मानता था और उसकी सजा का पक्षधर था, तो फिर आसिया की मृत्यु पर "उस रात औरतों ने चूल्हे नहीं जलाए, मर्दों ने खाना नहीं खाया सब एक दूसरे से आंखें चुराते रहे। यदि आसिया गुनहगार थी तो फिर उसके 'संगसार' होने पर यह दर्द, यह कसक उनके दिलों को क्यों मथ रही थी?"[5] आधुनिक समाज में मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्ग की नारियां हर क्षेत्र में समाज का प्रतिनिधित्व कर रही है। शिक्षित नारी में चेतना जागृत हुई जिससे वह अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हुई है। शिक्षा के कारण नारी में रुढ़ियों, परंपराओं और अंधविश्वासों के प्रति विश्वास कम हुआ है और वह अपने अधिकारों को पहचान कर समाज में संघर्ष करते हुए दिखाई देती है।

'तक्षशिला' एक दृढ संकल्प वाली आधुनिक पत्रकार महिला की कहानी है। इस पुरुष प्रधान समाज में नारी को एक भोग्य के अतिरिक्त कुछ नहीं समझा जाता, किंतु प्रस्तुत कहानी की नायिका इस तथ्य को पूर्ण कर दिखाती है कि नारी केवल भोग्या नहीं। उसका शोषण करना अब इतना सरल नहीं। नासिरा जी ने औरत के जिंदगी के सच को इस 'तक्षशिला' के तस्वीर के माध्यम से समाज के सामने रखा है।

"आज की औरत के पास न छत है, न जमीन सिर्फ दीवारें-सिर्फ दीवारें हैं। उन पर छत कौन डालेगा, क्या कोई मर्द? तब वही शोषित बेचारी औरत होगी।

औरत को यह काम स्वयं करना होगा। मर्द तो अपना हथियार अधिकार इतनी जल्दी वापस नहीं करेगा? निगार, इन दरिदों, इन भेड़ियों से यूं डरकर कहां तक भागोगी?''[6] यह संघर्ष सिर्फ उच्च और मध्यमवर्ग के नारियों के द्वारा ही नहीं बल्कि निचले तबके की नारियां भी अब जाग उठी हैं और वे भी इस संघर्ष में शामिल होने लगी हैं। पुरुष, स्त्री को भरपेट खाना, कपड़ा और घर की सुरक्षा देकर इस भूल में राहत कि उसने उस पर एहसान किया। नारी भी इन एहसानों तले अपने आपको दबा हुआ पाती है और पति को अपना परमेश्वर मानती है, लेकिन यह मिथ टूटने लगे हैं और वह पति को अपना पितृसत्तात्मक़ राजनीति को समझने लगी है और वह इस मानसिक स्थिती से छुटकारा पाने में कामयाब हो रही है। पितृसत्तात्मक एहसानों तले वो अपने अस्तित्व को मिटाना नहीं चाहती।

'शर्त' कहानी एक निचले तबके के मेहनतकश परिवार की कथा है। लेखिका के घर कामवाली आती है। जिसकी लड़की पार्वती को लेकर शर्त रखी जाती है। एक संवेदनशील उसकी पढ़ाई में दिलचस्पी लेता है। पर वह सीख नहीं पाती। पार्वती के विचार अलग हैं—''हर व्यक्ति का अपना मोर्चा, अपनी लड़ाई, अपना सपना होता है और उसको पूरा करने का उसको पूरा अधिकार है।''[7] यह सोच लेखिका को लगता है कि यह अपनी लड़ाई हार गयी पर जब पार्वती के बच्चों को पढ़ता देखती है, तो उसे लगता है कि आज वह शर्त जीत गयी है।

'दिलआरा' इस कहानी के अंतर्गत विधवा साजदा के माध्यम से दिलआरा और अन्य लड़कियों में धर्म, शरीयत और औरतों के हक के बारे में जागृती लाने की कोशिश की है, ''विधवा साजदा पति की मृत्यु के बाद मातम मनाने से अच्छा लड़कियों का स्कूल खोलकर अपने समय का उपयोग करती है। मोहल्ले के मौलाना को यह बात बहुत अखरती है। पढ़ने आने वाली लड़कियों में दिलआरा भी है जो धीरे धीरे अपनी स्वतंत्र चेतना को पा जाती है और निर्णय स्वंय लेने को उद्यत होती है। वह अंत में जो पसंद नहीं उस लड़के से विवाह करने से इन्कार करती है। उसकी परिस्थितियों में जो सोचा भी नहीं जा सकता अंततः वह कर गुजरती है।''[8]

इस तरह नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में नारियां समाज की सेवा करने तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ रही है। निष्कर्षतः नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में किसी भी धर्म संप्रदाय कि नारियों ने अपना विद्रोह अभिव्यक्त किया है। घर की चार दीवारी में कैद नारी, देहरी, लांघकर अपनी पीड़ा को स्वयं सबके सामने प्रस्तुत करती है। केवल वह विरोध ही नहीं, बल्कि बता रही है धर्म, समाज, राजनीति, साहित्य सभी के द्वारा यह शोषण, अत्याचार के विरुध आवाज

उठाने लगी है। इस तरह से नासिरा शर्मा के कथा साहित्य के नारी पात्र आज की नारी की विडंबना को चित्रित करते हैं।

संदर्भ

1. शाल्मली–नासिरा शर्मा, पृ. 74
2. शाल्मली–नासिरा शर्मा, पृ. 146
3. कहानी समग्र 'खंड दो'–नासिरा शर्मा, पृ. 129
4. कहानी समग्र 'खंड दो'–नासिरा शर्मा, पृ. 131
5. कहानी समग्र 'खंड दो'–नासिरा शर्मा, पृ. 148
6. कहानी समग्र 'खंड दो'–नासिरा शर्मा, पृ. 317
7. नासिरा शर्मा का कथा साहित्य–डॉ. शेख अपफरोज फातेमा, पृ. 106
8. नासिरा शर्मा का कथा साहित्य–डॉ. शेख अपफरोज फातेमा, पृ. 98